निकुञ्जरहस्यस्तवः

श्रीमद्रूपगोस्वामिना विरचितः

अर्थ सहायक—

सेठ वनखण्डी के आत्मज कोसी [बरसाना] निवासी
श्री चेतराम जी (चतुर्भुज जी) के संपूर्ण
आर्थिक सहाय से—

प्रकाशक व अनुवादक—

बाबा कृष्णदास

कुसुम सरोवर।

सं० २००१,
श्री राधाष्टमी
प्रथमावृत्तिः १०००

नौछावर

नित्य पाठ

समर्पणपत्रं

श्रीश्रीराधारमण चरणदासदेवस्यानुचरिण्याः,
ममाराध्यरूपायाः, निकुञ्जधामगतायाः,
श्रीललिता सखी नाम्ना प्रसिद्धायाः, परमपूज्यायाः,
परमपण्डितायाः, रसिकसमाजपूजनीयायाः,
कृतनिरन्तर मानसिकी सेवापरिचर्य्यायाः, नवद्वीप-
समाजवाटी निवासिन्याः, श्री सखीमातायाः
प्रीत्यर्थं समर्पितेदं
ग्रन्थरत्नं—

यह पुस्तक मिलने का पता—

१—लाला चेतराम (चतुर्भुज) जी कोसी-कलाँ,
(मथुरा।)

२—बाबा उद्धारणदासजी, कुसुमसरोवर, गवालियर-
मन्दिर, पो० राधाकुण्ड, (मथुरा)

३—बाबा गौरांगदासजी, श्रीराधारमणनिवास,
रमणरेती (वृन्दावन)

प्रस्तावना

भक्ति रस रूप राधाकृष्ण रस रूप पद रचना के रूप
याते रूप नाम भाखियै
त्याग रूप भाग रूप सेवा सुख साज रूप रूप ही की भावन
औ रूप मुख चाखियै ।
कृपा रूप भाव रूप रसिक प्रभाव रूप गात जातरूप
लखि मन अभि लाखियै
महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्यजू के हृदै रूप श्रीगोसांई रूप
सदा नैनन में राखियै ॥
(भक्तमाल टिप्पणी)

रूपेति नाम वद भो रसने सदा त्वं
रूपञ्च संस्मर मनः करुणास्वरूपम् ।
रूपं नमस्कुरु शिरः सदयावलोकं
तस्याद्वितीयसुतनुं रघुनाथदासम् ॥
ऐश बुद्धि बासितात्म लोकवृन्द दुर्ल्लभा
व्यक्त रागवर्त्म रत्नदान विज्ञवल्लभा ।
सप्रियालिगोष्ठपालिकेलिकीरमञ्जरी
मामुरीकरोतु नित्यदेह रूपमञ्जरी ॥
साधनदीपिका [अष्टम कक्षा]

प्रेम के दाता कलिपावनावतार श्रीमन्महाप्रभु के अन्तरङ्ग पार्षद, रसिक चूड़ामणि, ब्रजाचार्य्य, रागमार्ग प्रवर्त्तन के आदि गुरु श्रीमद्रूपगोस्वामी चरण के द्वारा विरचित यह "निकुञ्जरहस्यस्तव" नामक प्रिया प्रियतम के मनोहर स्तोत्ररत्न सानुवाद प्रकाशित होकर रसिक जनों के समक्ष उपस्थित हुआ है ; निकुञ्जविलास वैभव सागर के मन्थन से प्रकाशित बत्तीस

श्लोक रूप इस दिव्य चिन्तामणि महारत्न को रसिक समाज अपने हृदय सम्पुट में धारण कर उस का सरस अनुभव प्राप्त करें इसलिये ही मेरा यह परिश्रम है। निःसन्देह स्तोत्रकार श्री रूपगोस्वामी चरण ने सीमा रहित, परमगम्भीर अपने वाणी रूप विशाल सरस दिव्य मन्दाकिनी धारा को उछाल कर जो अनुराग पवन से चलायमान, श्रीमन्महाप्रभु की कृपा माधुर्य्य-कादम्बिनी [माधुर्य्यमेघमाला] से पुष्ट, प्रेम तरङ्गों से तरंगायमान, दिव्यातिदिव्य शृंगार रस जल से पूर्ण तथा कभी विरहसूर्य्य किरणों से तपायमान या कभी संयोगरूपी शीतलचंद्र किरणों से आल्हाद प्राप्त है उसमें से इस स्तोत्र रूप दिव्य चिन्तामणि महाधन का प्राकट्य किया है। इधर प्रभु की कृपा मोहिनी देवी ने उस रत्न का मनोहर हार बना कर रसिक प्रेमी जनों के कंठ देश में पहिनाय कर सबको योग्य बनाया। नास्तिक अभक्त इस महान् धन की प्राप्ति करने में बंचित होने पर भी निरन्तर ललचाए। भाव यह है कि गोस्वामीचरण ने केवल रसिकजनों के सुख के लिये इस मनोहर स्त्रोत्र रत्न को उघाड़ कर दिखा दिया। श्री रूप सनातन के आनुगत्य होकर सखी मञ्जरी भाव से राधागोविन्द की सरस दैनन्दिनी लीला का स्मरण करने वाले रसिकों का तथा अन्यत्र प्रेमियों का यह स्तोत्ररत्न परम उपादेय रूप है। साधक अपने को सिद्ध मञ्जरी स्वरूप से भावना करता हुआ स्थिरचित्त से रात्रिकाल में नित्य इसको पाठ करे। निकुञ्जविलासवैभव वर्णन में यह स्तोत्रसर्व्वोपरि है तथा प्रारम्भिक भी है। श्लोक संख्या में यह स्तोत्र छोटा होने पर भी अपनी महीमा के बल से सर्व व्यापक है। हिन्दी भाषा भाषी रसिक जनता में तथा सरस प्रेमी पण्डित समाज में भी इसके प्रचारणार्थ मेरी उसे सानुवाद प्रकाशित

करने की बहुत दिन से इच्छा थी। गुरु गौराङ्ग गणों की कृपा से आज यह इच्छा सफल हुई। आशा तो इसको विषद् व्याख्या रूप से प्रकाशित करने की थी, किन्तु सर्व साधारण को उपादेय न जानकर केवल मूलानुसार व्याख्या के साथ ही इसे मैं इस समय प्रकाशित करने को बाध्य हुआ। दूसरे यद्यपि यह सर्व साधारण में प्रकाशित करने की वस्तु नहीं है तो भी यह लुप्त न हो जावें व अन्यत्र कहीं न चली जावें इसलिये ही इस समय इसको प्रकाशित करना आवश्यक प्रतीत हुआ, वैसे इसके बंगाक्षर में कई संस्करण छप चुके हैं।

अब दूसरी विचारणीय वस्तु यह है कि हाल में ही द्वारकादास परीख, वल्लभीयसुधाकार्य्यालय (मथुरा) के द्वारा प्रकाशित "वल्लभीयसुधा" नामक त्रैमासिक पत्रिका के अङ्क २—३—४ [महा फाल्गुन चैत्र स० २००६ वि०, । वैशाख से आश्विन सं० २००६ वि०] में भी यही स्तोत्र प्रकाशित हुआ है। यह कार्य्य तो बहुत स्तुत्य था, परन्तु उक्त महोदय ने न जाने किस कारण से उस स्तोत्र के रचियता के नाम के स्थान पर श्री रूपगोस्वामी जी के नाम को हटाकर श्रीविट्ठलेश्वर प्रभु चरण प्रणीत करके लिख दिया। साथ ही साथ "निकुञ्जरहस्य-स्तव" के स्थान पर "निकुञ्जविलास" लिख कर इसे छपवाया तथा स्तोत्र के पहिले श्लोक को हटाकर उन्नीस संख्या में तथा उन्नीसवें श्लोक को दशमी संख्या में छपाया। इस प्रकार प्रायः अस्तव्यस्त करके स्तोत्र का प्रकाशन किया गया। मैं उक्त महोदय से मिला तथा इस विषय में प्रार्थना भी की। परम सज्जन आपने अगली पत्रिका में इसका संशोधन पत्र निकालना भी स्वीकार कर लिया है। आशा है अगली पत्रिका में उक्त महोदय अपने भ्रम का संशोधन करके उदारता का परिचय

देकर व्यथित हृदय सज्जनों को प्रसन्न करेंगे । निःसन्देह यह स्तोत्र श्री रूपगोस्वामीजी के द्वारा रचा गया है, क्योंकि महा-प्रभु के सम सामयिक श्रीवंशीवदन ठाकुर हुए । आपने छन्दवद्ध (पयार छन्द) भाषा में इसकी टीका भी की थी । उन्होंने अपने अनुवाद के प्रारम्भ में लिखा है ।—

यत यत रसिक भकतजन रोजत त्रिभुवन मण्डल माझ।
सुख निधि नित्य युगलरस विवरिते जानइ सवाकार राज ॥
धनि धनि ताहि विशेष नव रंगिनी सखी मणि संगहि संग।
श्री रूप यैछन प्रकट निहारये ऐछन रचे रस रंग ॥
सु निभृत निकुञ्ज रहस्य स्तव सुन्दर वान्धल संस्कृत छान्दे।
तछु युग चरण कृपा अनुसारइ वंशी पयार करि वान्धे ॥

परिशिष्ट में—

अति मनोहर नव निकुञ्जरहस्यस्तव दुँहार विलास सुख रासि ॥

इत्यादि ।

ताडाश वाले मन्दिर वृंदावन में राजर्षि बनमालीराय बहादुर की सहायता से नित्यस्वरूप ब्रह्मचारी के द्वारा उक्त स्तोत्र ग्रंथ वंशीबदन ठाकुर महोदय के छंदवद्ध अनुवाद के साथ अष्टटीका भागवत के सहित पहिले वंगाक्षर में प्रकाशित हो चुका है । उसका संवत १९५९ है उसमें श्रीअद्वैत प्रभुके वंशज श्रीराधिकानाथ गोस्वामीजी के द्वारा विरचित रहस्यार्थ प्रकाशिका नामक संस्कृत टीका भी है । बङ्गदेश में भी इसके केई संस्करण छप चुके हैं। महाप्रभु के अनुगत वैष्णवजन प्रायः इसका नित्य ही पाठ करते हैं, मैं स्वयं भी इसका नित्य पाठ करता हूँ—

—बाबा कृष्णदास.

निकुञ्ज–रहस्य स्तवः

नव ललितवयस्कौ नव्यलावण्यपुञ्जौ
नव रस चलचित्तौ नूतनप्रेमवित्तौ।
नव निधुवनलीला कौतुकेनातिलोलौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ १ ॥

द्रुतकनक--सुगौरस्निग्धमेघौघनील-
च्छविभिरखिलवृन्दारण्यमुद्भासयन्तौ।
मृदुलनवदुकूले नीलपीते दधानौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ २ ॥

प्रथममिलनभीतोद्भाषिताश्वासवाचौ
प्रियतम--भुजरोधव्यग्रहस्तौ रतोत्कौ।

रे मन ! तू परम मनोहर कैशोर वयस वाले और मुक्ताफल की छाया की तरह नव-लावण्य के राशि रूप तथा नवायमान श्रृंगाररस में चञ्चल चित्त वाले तथा जिनके नवीन प्रेम ही परम धन है और निधुवन की लीला कौतुक में अत्यन्त चञ्चल श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥ १ ॥

हे मन ! द्रवायमान सुवर्ण तथा सघन मेघ समूह की भाँति गौर नील कान्तियों से समग्र वृन्दाबन को भासमान करने वाले, नवीन मृदुल नील पीत पाटम्बर धारीणि, श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में तू स्मरण कर ॥२॥

नव संगम में भीत तथा कोमल आश्वासना देने वाले,

अलमलमितिलीला गद्गदोक्त्युन्मदान्धौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ ३ ॥

प्रियरतिसमनुज्ञामार्गनानम्रवक्त्रो-
न्नमितचिबुकदृष्टया स्मेरकान्ताननाब्जौ ।
किमिह कुरुष इत्यास्वाद्यवाक्किञ्चनोक्ती
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ ४ ॥

प्रतिपद प्रतिकूलानुग्रहव्यग्रमूर्त्ती
वहु विरचित नाना चाटुकारप्रकारौ ।
नवसुरत--विलासोत्सुक्यगूढ़प्रकाशौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ ५ ॥

भुज प्रसारण तथा भुज रोध में व्यग्र हस्त वाले, क्रीडा में उत्कण्ठित, "छोड़िये छोड़िये मत जाइये, मत जाइये" इस प्रकार गद्गद् बोलने वाले, आनन्दमत्त श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में तू स्मरण कर ॥ ३ ॥

प्रिय के रति प्रयोग में अनुमति जान कर नम्रबदना तथा चिबुक उठा कर उसमें दृष्टि अर्पण के द्वारा ईषत् हास्य-युक्त मनोहर बदन कमल वाले और "सखी मण्डल के बीच यह क्या करते हैं" इस प्रकार आस्वाद योग्य वचन समूह को बोलने वाली, तथा रहस्य प्रकाशक मन्द मन्द बोलने वाले श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में तू स्मरण कर ॥४॥

पद-पद में प्रिया के द्वारा हठ करने के कारण तथा प्रिय के द्वारा आग्रह करने के कारण चंचल मूर्त्ति वाले, नाना प्रकार के चाटु वचन व्यवहारकारी, नव नव सुरत प्रयोग के विलास में उत्कण्ठित होकर प्रिया के द्वारा गोपन तथा प्रिय के द्वारा प्रकाश करने वाले श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में तू स्मरण कर ॥ ५ ॥

सुरतकलह सौख्यैः काकुवादप्रणामा-
धिकविरचितमान्यौ दुर्गमप्रेमभंगौ ।
स्मितमधुरमृदूपालम्भहृन्नीतकान्तौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ ६ ॥

नव किशलयतल्पे कल्पयन्तौ विचित्रां
सुरतसमरलीलामुन्मदानगरङ्गौ ।
ललित वलय काञ्ची नूपूरध्वानरम्यौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ ७ ॥

प्रियकरपरिमर्दोज्जृम्भमानोरुवक्षो-
रुहमनसिजकण्डूद्दण्डकन्दर्पलोलौ ।
नमित दयितपाणि स्पृष्टनीवीनिवन्धौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ ८ ॥

सुरत कलह सुख में काकुवाद और प्रणाम के द्वारा अधिक गौरव बढ़ाने वाले, जिनके प्रेम सागर की तरङ्ग दुर्बोध है, उन मन्दहास्य के साथ कोमल तिरस्कारादि करने में व्यग्र हृदय श्री-राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में तू स्मरण कर ॥६॥

नवीन किसलय निर्म्मित शय्या में विचित्र सुरत युद्ध बढ़ाने वाले, उद्गत अनङ्ग रङ्ग में मत्तता जिनके, ललित वलय, किंकिणी, नूपुर ध्वनियों से मनोहर श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में तू स्मरण कर ॥ ७ ॥

श्रीकृष्ण के हस्त द्वारा बारम्बार संघर्ष से उठा है स्तन कमलों में कामकण्डू जिनकी तथा उद्दण्डता कन्दर्प केलि के कारण चंचल हृदय जिनके ऐसे दोनों, नीविबन्धन स्पर्श करने में वा कराने में जिनसे प्रिय के हस्तकमल स्थापित हुए हैं ऐसे श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥८॥

प्रियतम-कृत-गाढ़ाश्लेषखर्व्वायितोरु
स्तनमुकुल मनोज्ञावल्लभैकात्मतेच्छुः ।
किमपि रचित शुष्कक्रन्दितोदारहासौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ ६ ॥

सततसुरततृष्णाव्याकुलाबुन्मदिष्णू
विपुलपुलकराजद्गौरनीलोज्वलाङ्गौ ।
मिथ उरुपरिरम्भादेकदेहायमानौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ १० ॥

सततमपरिमानोज्जृम्भमानानुरागौ
मदरसभरसिन्धू लोलदोलायिताङ्गौ ।
दलितसकलसेतू धन्यगोप्येकरम्यौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ ११ ॥

प्रियतम के गाढ़ आलिंगन से खर्व्वित स्तन मुकुल के द्वारा मनोहारिणी, प्रियतमा के साथ एकात्मता भाव को चाहने वाले, शुष्क रोदन करने वाली तथा उदार हास्ययुक्त श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥ ६ ॥

निरन्तर सुरत रस तृष्णा में व्याकुल, उन्मत्त, विपुल पुलकावलि से शोभायमान गौर नील उज्वल शरीर वाले और परस्पर के निविड़ आलिंगन से मानो एक देह रूप, श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥ १० ॥

जिनके निरन्तर उच्छलित असीम अनुराग गर्व रसाधिक्य के सागर के समान, चंचल दोलायमान अङ्ग हैं और जिनके नाश हो रहा है धैर्य दैन्यादिक भाव समूह अथवा लोकवेद से अतीत, सुकृत स्वरूपा गोपियों से मनोहर श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥ ११ ॥

विलुलितवरवेणी--हारमालावतंसौ
मृदुलमधुरहासोल्लासिवक्त्रेन्दुबिम्बौ ।
अतिरस मदलोलौ चित्रकन्दर्पकेलौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचंद्रौ ॥ १२ ॥

सुरतरसमदाब्धौ सन्ततं सन्तरन्तौ
त्रुटित वलय काञ्ची दाम हारावलिकौ ।
मणिकनक विभूषोत्सारभास्वत्पराङ्गौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ १३ ॥

स्तवकित मणिदाम्ना प्रेयसागुम्फितास्य-
द्भुत सुललितवेणी प्रेयसीक्लृप्तचूडौ ।
मिथ उदयदखण्ड प्रेम रज्जू विबद्धौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ १४ ॥

जिनकी श्रेष्ठ वेणियाँ, हार, माल्य, भूषणादिक विदलायमान होगये हैं और मन्द मधुर हास्य से जिनका मुख चन्द्रविम्ब उल्लसित है तथा जिनकी अतिशय सुरत गर्व से चपल, विस्मापनी कन्दर्पसम्बन्धिनी क्रीडा है ऐसे श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥ १२ ॥

सुरतरस के गर्वसागर में निरन्तर तहरने वाले, जिनके वलय, किंकिणी, पुष्पों की मालायें, हार समूह टूट गये हैं, मणि कनक भूषणादिक अस्त व्यस्त हो जाने से जिनके उत्तम अंग प्रत्यंग शोभायमान हो रहे हैं, ऐसे श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥ १३ ॥

गुच्छायमान तथा प्रिय के द्वारा ग्रंथित (गूंथी हुई) मणि-माला से जिनकी वेणी सुललित हो रही है, और श्रीप्रिया के द्वारा जिनकी चूडा रची गयी है, परस्पर के उदय प्राप्त अखण्ड प्रेम रज्जु से परस्पर विशेषरूप से बन्ध जाने वाले, ऐसे

जघनलुलितवेणी विस्फुरत्वर्हचूडौ
कनक रुचिरचूडा कंकणद्वन्द्वपाणी ।
विलसदरुणरोचि: पीतकौशेयवासौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ १५ ॥

कनकजलदगात्रौ नीलशोणाब्जनेत्रौ
मृगमदरसभालौ मालतीकुन्दमालौ ।
तरलतरुणवेशौ नीलपीताम्बरेशौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ १६ ॥

ललितनवकिशोरौ नव्यलावण्यपुञ्जौ
सकलरसिक चूडालंकृती मुग्धवेशौ ।

श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥ १४ ॥

जंघों में चञ्चल मनोहर वेणी वाली तथा शोभायमान मयूरपंख की चुडा वाले, सुवर्ण निर्म्मित रुचिर चूडा तथा दोनों हस्त में कंकण धारण करने वाले, शोभायमान अरुण कान्ति तथा पीत कौशेय वस्त्र धारण कारी श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥ १५ ॥

जो सुवर्ण तथा जलद शरीर वाले हैं और जिनके नील तथा रक्त कमल की तरह नेत्र हैं और जो कपोल देश में मृगमद रस तथा गले में मालती, कुन्द माला धारण करते हैं, जिनका नवीन वेश है, नीलाम्बर तथा पीताम्बर धारी उन श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥ १६ ॥

अभिनव ललित किशोर वय वाले, नवीन लावण्य की राशि, रसिक समुदाय के शिरोभूषण के अलंकार स्वरूप अर्थात परम रसिक शेखर, सुन्दर वेषधारी, अत्यन्त मधुर मूर्त्ति वाले, विद्युत् तथा मेघ की कान्ति की तरह कान्तियुक्त अर्थात् कान्त्यामृत तथा रसिकतामृतों की वर्षण से निजापेक्षित भक्त

मधुरमधुर मूर्त्तौ विद्युदम्भोदकान्ती
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ १७ ॥

किमपि परमशोभामाधुरीरूपचेष्टा
हसित ललित दृष्ट्यात्यद्भूतोत्कर्षकाष्ठाम् ।
परमरसरहस्यावेशतः सन्दधानौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ १८ ॥

निखिलनिगमगूढ़ौ नित्यमन्यान्यगाढ़
प्रणयभरविवृद्धौ तुङ्गितानङ्ग चेष्टौ
सुरतरसमदान्धौ न्यस्तजीवौ मिथोऽङ्गे ।
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ १९ ॥

रमणवदनचन्द्रे दत्तताम्बुलवीटी
निजरसनिधिवक्त्रे दत्तातच्चचर्व्यभागौ ।

शस्यों के जीवनरूप श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥ १७ ॥

परम रस रहस्य में आवेश के कारण जो अत्यन्त शोभा, माधुर्य्य, सौन्दर्य्य, चेष्टा, हास्य, रसमयी भर्त्सना, परिहास, कोप-सूचक दृष्टि इत्यादि के द्वारा अद्भुतता की चरम सीमा को धारण करने वाले हैं, उन श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥ १८ ॥

अत्यन्त प्रेम विषय के कारण निखिल निगम करके गुप्त रूप, नित्य परस्पर निविड प्रीति के आधिक्य वश वृद्धि प्राप्त अर्थात् पुष्ट हैं, और जो अप्राकृत अनंगचेष्टा में शोभायमान, सुरतरस में मदान्ध, परस्पर एक दूसरे के लिये जीवन समर्पण करने वाले हैं उन श्रीराधिकाकृष्णचंद्रको निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर। १९

परस्पर परस्पर के रमणीय वदनचन्द्र में ताम्बूल का

मिथ उरुरसदाङ्ग स्पर्शलोलुभ्यमानौ
स्मर निभृतनिकुंजे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ २० ॥

अति रसमदवेगान्निस्त्रपाधैर्य्यदृष्टी
क्रम समुदित तत्तन् सौरताश्चर्य्यनिती।
वहिरतिरसलीलानुव्रतावामवर्णौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ २१ ॥

रजत भवन रन्ध्रायातसन्मन्दशीता
निलविदलिततुङ्गानङ्गसंग्रामखेदौ।
क्षणसहचररम्यारब्धभूयो विहारौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ २२ ॥

वीड़ा अर्पण करने वाले तथा प्रियतम के द्वारा उसका चर्व्वणांश प्रियतमा के मुख में प्रदान करने में व्यग्र और परस्पर अत्यन्त रसद अंग प्रत्यंगों को स्पर्श करने में लोलुप श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृतनिकुञ्ज में स्मरण कर ॥ २० ॥

अत्यन्त रस मत्तता के वेग से जिनकी लज्जा रहित तथा धैर्य्य शून्य दृष्टि है और जिनकी क्रम से सुरतचर्य्या की आश्चर्य्यनीति उदय हो रही है और जिनके लीलागृह के बाहर अत्यन्त रसमयी उन लीला के पात्र रूप सखी मञ्जरी गण विराजमान होकर उन लीला का वर्णन करते हुए आस्वादन कर रहे हैं, उन श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥२१॥

मणिमय भवन के गवाक्ष रन्ध्रों में जाने आने वाले सुगन्ध मन्द शीतल पवनों से जिनके अनंग संग्राम के श्रम लुप्त हो रहा है और जो उत्सव परायण सहचरी गणोंके द्वारा उत्सुक हो पुनर्वार विहार सुख आरम्भ कर रहे हैं उन श्री राधिका कृष्ण-चन्द्र को निभृत निकुञ्ज में स्मरण कर ॥२२॥

तदति ललित लीला लोल लोलाङ्ग लक्ष्यौ
सुललित ललितादे निर्णिमेषाक्षिरन्ध्रैः ।
हृदयमुपनयन्तौ पूर्ण सौख्याम्बुराशी
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका कृष्णचन्द्रौ ॥ २३ ॥

प्रणयमयवयस्याः कुञ्जरन्ध्रार्पिताक्षीः
क्षितितलमनुलब्ध्वानन्दमूर्च्छां पतन्तीः ।
प्रतिरतिविदधानौ चेष्टितैश्चित्रचित्रैः
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥२४॥

बहुविधपरिमृष्टान्योन्यगात्रावजस्रं
बहुविध परिपृच्छा कारितान्यान्यवाचौ ।
अनिमिषनयनालि स्वादितान्यान्यवक्त्रौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ २५ ॥

मधुररस परिकरों की मनोहारिणी अति सुन्दर सुरत-लीला में जिनके कटि, नितम्ब, बाहु, मुखादिक सकल अंग चंचलायमान होने के कारण मानों लक्ष संख्या हो रहे हैं और जो सुललित ललितादि सखियों के निमेष रहित नयन द्वारों से हृदय देश में प्राप्त हो रहे हैं तथा जो पूर्ण सौख्य के सागर रूप हैं, ऐसे श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥२३॥

रति के पद पद में विचित्र से विचित्र चेष्टाओं के द्वारा निकुंज गवाक्ष जाल के छिद्रों में नयन अर्पण करने वाली अथच पृथ्वी में आनन्द मूर्छा को प्राप्त होने वाली प्रेममयी सखियों को हृदय में धारण करने वाले, श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥ २४ ॥

निरन्तर पारस्परिक हस्त कमल के द्वारा अंग समूह मार्जन करने वाले तथा अनेक प्रकार की जिज्ञासाओं के द्वारा

मनसिजरससिन्धोरद्भुतावर्त्त वेग
भ्रमिततनुमनस्कौ केलिविस्मापिताली ।
वहुविधरसगात्रस्पर्शजल्पप्रहासौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥२६॥
वहुलसुरतखेलायाससंखिन्नगात्रौ
दयितनिजसखिभि र्वीज्यमानौ पटान्तैः ।
सरसभुजगवल्ली पल्लवास्वादिवक्त्रौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥२७॥
मिथ उरुपुलकश्री दोर्ल्लतावद्धकण्ठौ
व्यतिमिलितमुखेन्दू किंकणी लालितांघ्री ।

अनेक प्रकार की वचन रचना सृष्टि करने वाले, निमेष रहित नयन रूप सखियों के द्वारा पारस्परिक मुख कमल आस्वादन-कारी श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥२५॥

जिनके शरीर और मन कन्दर्परस - सागर के अद्भुत आवर्त्तन (घूर्णन) के बेग से चलायमान हैं और जो क्रीड़ा समूह से सखीवृन्दों को विस्मय करने वाले हैं तथा जो परस्पर अनेक प्रकार के रसमय शरीर का स्पर्श और हास्य वचन युक्त हैं उन श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥२६॥

जिनके शरीर अनेक प्रकार की सुरतक्रीड़ा के परिश्रम से खेद प्राप्त हो रहा है तथा जो निज प्रिय सखियों के द्वारा पटाञ्चल से वीज्यमान हैं और जिनके मुख कमल सरस ताम्बूल पल्लव के आस्वादन से शोभायमान है, ऐसे श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥२७॥

विपुल पुलकावलि से परस्पर शोभायमान,जिनके गल-देश परस्पर की भुजलताओं से बेष्टित है और परस्पर के मुख कमल में परस्पर

नवरतिरसखेला श्रान्तितन्द्रालुनेत्रौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ २८ ॥

सुरतरससमुद्रे पादमाचूडमग्नौ
त्रुटिलवमिव यातां मन्यमानौ त्रियामाम् ।
प्रतिनिमिषमसीमोज्जृम्भितानङ्गतृष्णौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ २९ ॥

तदतिमधुरधाम्नि नाम्नि वात्सल्यमात्रात्
कथमपि कलनीयौ कस्यचिद्भाग्यसीम्नः ।
श्रुतिततिभिरगम्यौ सत्सभाजस्सङ्गौ
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिकाकृष्णचन्द्रौ ॥ ३० ॥

मुख मिलाने वाले, तथा जिनके चरण कमल किंकिणी से शोभायमान है और जो नवीन रतिरस क्रीड़ा से श्रान्ति प्राप्त हैं अर्थात् जिनके नेत्र कमल निद्रारस से व्याकुल हैं ऐसे श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥२८॥

सुरत रस सागर में आपाद मस्तक (चरण से लेकर मस्तक पर्य्यन्त) मग्न शील, त्रुटि लव काल को भी एक रात्रि मानने वाले, तथा जिनके निमेष निमेष में असीम अनंग तृष्णा उठती है ऐसे श्री राधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥२९॥

नाम धाम के वात्सल्य मात्र से अर्थात् अति अल्पमात्र यत् किंचित् नाम धाम के अनुशीलन से सीमा प्राप्त सौभाग्य क्षेत्र शील किसी व्यक्ति का हेला व श्रद्धा से भी ग्रहण रूप, वेद समूह से अगम्य, निखिल सज्जनों द्वारा वन्दनीय, केवल सखी मञ्जरियों की सभा में संप्राप्त श्रीराधिका कृष्णचन्द्र को निभृत निकुंज में स्मरण कर ॥३०॥

परमरसरहस्यानन्दनिस्यन्दिवृन्दा
वनविपिननिकुञ्जे दिव्यदिव्यै र्विलासैः ।
निरवधिरसमानौ राधिकाकृष्णचन्द्रौ
भज सकलमुपेक्ष्य तावकी शास्त्रयुक्ती ॥ ३१ ॥

स्तवमिममतिरम्यं राधिकाकृष्णचन्द्र
प्रमदभरविलासैरद्भूतं भावयुक्तः ।
पठति य इह रात्रौ नित्यमव्यग्रचित्तः
विमलमतिसु राधालीसु सख्यं लभेत ॥ ३२ ॥

इति श्रीमद्रूपगोस्वामिना विरचितः
श्रीनिकुञ्जरहस्यस्तवः समाप्तः

निकुंजविलासवैभव (एकात्म) मूर्ति श्रीमन्महाप्रभु का स्मरण ।

गौराः भृंगकुरंगकोकिलगणाः गौराः शुकाः सारिकाः
गौराः सर्व्व महीरुहाः बनचयाः गौराणि पुष्पाणि च ।
गौराश्चक्रकपोतवर्हिविहगाः गौरं च वृन्दाबनं
राधादेहरुचाद्भुतः सखि स च श्यामोऽपि गौरायते ॥१॥

रे मन ! देह, गेह, शास्त्रयुक्ति, प्रभृति का पूर्णतः उपेक्षा करके परमरस रहस्य आनन्द के सागर रूप वृन्दाबन के निकुंज में दिव्यातिदिव्य विलासों से निरन्तर शोभायमान श्रीराधिका कृष्णचन्द्र का भजन कर ॥३१॥

जो भावयुक्त होकर रात्रिकाल में स्थिरचित्त से राधिका कृष्णचंद्र के प्रमोद भरे विलासों से अद्भुत मनोहर इस स्तव का पाठ करे वह विमल मतिवाली राधिका की सखियों में सख्य रूप को प्राप्त होता है अर्थात् सखी रूप होकर युगल सरकार की सेवा को प्राप्त करता है ॥ ३२ ॥

इति श्रीमद्रूपगोस्वामिविरचित निकुंजरहस्यस्तव का
अनुवाद समाप्त ॥

राई अंग छटाय उदित भेल दश दिश
श्याम भेल गौर आकार।
गौर भेल सखी गण गौर निकुंज वन
राई रूपे चौदिके पाथार ॥
गौर भेल सुक सारी गौर भ्रमर भ्रमरी
गौर पाखि डाके डाले डाले।
गौर कोकिल गण गौर भेल वृन्दावन
गौर तरु गौर फल फुले ॥
गौर जमुना जल गौर भेल जलचर
गौर सारस चक्रवाके।
गौर आकास देखि गोरा चाँद तार साखी
गौर तारा वेढ़ि लाखे लाखे ॥
गौर अवनी हैल गौर मय सब भेल
राई रूपे चौदिक झाँपित।
नरोत्तमदास कय अपरूप रूप नय
दुहुँ तनु एकइ मिलित ॥२॥

भज-निताइ गौर राधेश्याम।
जप—हरेकृष्ण हरेराम ॥

गौडीयग्रन्थगौरवः—

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१—गदाधरभट्टजी की वाणी
२—सूरदास मदनमोहनजी की वाणी
३—माधुरीवाणी (माधुरीजी कृता)
४—वल्लभरसिकजी की वाणी
५—गीतगोविन्दपद (श्रीरामरायजी कृत)
६—गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजीकृत)
७—हरिलीला (ब्रह्मगोपालजीकृता)
८—श्रीचैतन्यचरितामृत (श्रीसुबलश्यामजीकृत)
९—वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (वृन्दावनदासजीकृता)
१०—विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दावनदासजीकृता)
११—प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दावनदासजीकृता)
१२—प्रियादासजी की ग्रंथावली
१३—गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगणदासजीकृता)
१४—राधारमणरससागर (मनोहरजीकृत)
१५—श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजीकृतः)

सानुवाद संस्कृतभाषा में—

१—अर्चाविधिः (संगृहित)
२—प्रेमसम्पुटः (श्रीविश्वनाथचक्रवर्तीजीकृत)
३—भक्तिरसतरंगिणी (श्रीनारायणभट्टजीकृता)
४—गोवर्द्धनशतक (विष्णुस्वामी संप्रदायाचार्य्य श्रीकेशवाचार्य्यकृत)
५—चैतन्यचन्द्रामृत और संगीतमाधव (श्रीप्रबोधानन्दसरस्वतीजीकृत)
६—नित्यक्रियापद्धति (संगृहित)
७—ब्रजभक्तिविलासं श्रीनारायणभट्टजीकृत)
८—निकुञ्जरहस्यस्तव (श्रीमद्रूपगोस्वामिकृत)

मुद्रक—लोक साहित्य प्रेस, मथुरा।